सऊदी अरब-रियाज़
इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय
रब्वा
1430-2009

islamhouse.com

मुसलमान की सहायता करना एक धार्मिक कर्तव्य है

[हिन्दी]

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

All islamhouse.com rights are open

P

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، والصلاة والسلام على المبعـوث رحمـة للعـالمين،
نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين، ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين، أما بعد:

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए है, तथा अल्लाह की दया और शान्ति की वर्षा हो हमारे पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, आप की संतान, आपके सहाबा किराम (साथियों) और क़ियमात के दिन तक आप का अनुसरण करने वालों पर।

अल्लाह की किताब और उसके पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत (हदीस शरीफ) में मुसलमान को अपने मुसलामन भाई की सहायता करने का आदेश आया है, और इसके विरूध रवैया अपनाने वाले और अपने भाई को असहाय छोड़ देने वाले को धमकी दी गई है, इस विषय में वर्णित आयात और अहादीस का उल्लेख किया जा रहा है।

मुसलमान की सहायता करना अनिवार्य है :

एक मुसलमान पर अपने मुसलमान भाई की सहायता करने और मुसीबतों (आपत्तियों) में उनके साथ खड़े होने को अनिवार्य करने वाले प्रमाणों में से अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फरमान है :

''अपने भाई की मदद करो चाहे वह ज़ालिम हो या मज़्लूम'', एक आदमी ने कहा : ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! जब वह मज़्लूम हो तो मैं उसकी मदद करूँ, किन्तु यह बतायें कि जब वह ज़ालिम हो तो फिर मैं उसकी मदद कैसे करूँ? आप ने फरमाया : ''तुम उसे ज़ुल्म करने से रोक दो, क्योंकि यही उसकी मदद करना है।'' (सहीह बुखारी)

तथा बुख़ारी व मुस्लिम में अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''हर मुसलमान पर सद्क़ा व ख़ैरात करना वाजिब है।'' पूछा गया : आप बतायें कि अगर उसके पास (सद्क़ा के लिए) कुछ न हो तो? आप ने उत्तर दिया : ''अपने हाथ से कार्य करे, जिस से अपने आप को लाभ पहुँचाए और सद्क़ा भी करे।'' कहा गया : आप बतायें कि अगर उसके पास इसकी ताक़त न हो? आप ने फरमाया : ''किसी परेशान हाल ज़रूरतमंद की सहायता कर दे।'' (सहीह बुखारी व मुस्लिम)

मुसलमान की मदद करने की तरग़ीब (अभिरूचि) :

क़ुरआन व हदीस में इसकी अभिरूचि दिलाई गई है.. चुनाँचि मोमिनों की सहायता करना ईमान की सच्चाई की निशानी है, अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴾ (التوبة: ٧١)

''मोमिन पुरूष और महिलाएं आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, वे भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं, नमाज़ क़ाईम करते हैं और ज़कात देते हैं, तथा अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (फरमांबरदारी) करते हैं, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला दया करे गा, अल्लाह तआला शक्तिवान और ग़ल्बे वाला और हिक्तम वाला है।'' (सूरतुत्तौबा :71)

तथा इस उदाहरण पर ग़ौर कीजिए जो हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान किया है; नो'मान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्हों ने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''मोमिनों का उदाहरण आपस में एक दूसरे से महब्बत करने, एक दूसरे पर दया करने, और एक दूसरे के साथ हमदर्दी और शफक़त कराने में, शरीर के समान है कि जब उसका कोई अंग बीमार हो जाता है तो सारा शरीर बेदारी और बुखार के द्वारा उसके साथ होता है।'' (बुखारी व मुस्लिम)

और बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए एक दीवार के समान है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्सा को शक्ति पहुँचाता है।'' और आप ने अपने एक हाथ की अंगुलियों को दूसरे हाथ की अंगुलियों में दाखिल किया।

अम्र बिन शुऐब अपने बाप (शुऐब) से और वह (शुऐब) अपने दादा (अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने कहा कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''मुसलमानों के खून आपस में बराबर हैं, और उनका साधारण आदमी उनका अहद व पैमान दे सकता है, और उनका दूर का आदमी भी उन पर पनाह (शरण) दे सकता है, और वे सब अपने सिवाय दूसरे लोगों पर एक हाथ हैं।'' (अहमद, अबू दाऊद)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर चलते हुए मुसलमानों की स्थिति की देख-रेख करना और उनका ध्यान रखना :

हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी मुसलामन पर कोई मुसीबत, दुर्दशा, आपदा और संकट देखकर दुःखित हो जाते थे, और लोगों को अल्लाह के रास्ते में खर्च करने पर उभारते थे; यहाँ तक कि अल्लाह तआला उनके संकट, आवश्यकता, आपदा, दुदर्शा और परेशानी को समाप्त कर दे। हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें इस बात की शिक्षा दी है कि हम आपित्त-ग्रस्त और संकट-पीड़ित लोगों के साथ कैसा व्यवहार करें, चुनाँचि सहीह मुस्लिम में जरीर बिन अब्दुल्लाह अल-बजली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्हों ने कहा : हम दिन के आरम्भिक भाग में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे, कि आप के पास कुछ लोग आये जो नंगे शरीर, नंगे पैर, चित्ती-दार (धारी-दार) चादर या जुब्बा पहने हुए और तलवारें लटकाये हुए थे, {उनके ऊपर इसके सिवाय कोई तहबंद या कोई अन्य चीज़ नहीं थी} उन में से आम लोग मुज़र क़बीले के थे, बल्कि सब के सब मुज़र से ही थे। उनकी दुर्दशा देख कर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे का रंग बदल गया, चुनाँचि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (घर के) अन्दर गए फिर बाहर निकले और बिलाल को हुक्म दिया तो उन्हों ने अज़ान दी और इक़ामत कही, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने {ज़ुह्र की} नमाज़ पढ़ाई {फिर एक छोटे मिंबर पर चढ़े} फिर खुत्बा दिया {चुनाँचि अल्लाह की प्रशंसा और गुणगान बयान} करते हुए फरमाया : {अल्लाह की प्रशंसा और गुणगान के बाद, अल्लाह तआला ने अपनी किताब में यह आयत उतारी है}

''ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो अपने उस पालनहार से डरो जिस ने तुम्हें एक प्राणी से जन्म दिया, और उसी से उसका जोड़ा भी बनाया, और उनसे बहुत से मर्द और औरतें फैला दिये, उस अल्लाह से डरते रहो जिस के द्वारा तुम एक दूसरे से माँगते हो, निःसन्देह अल्लाह तआला तुम्हारे ऊपर निरीक्षक है।'' तथा वह आयत जो सूरतुल हश्र में है {''ऐ लोगो! जे ईमान लाए हो, अल्लाह तआला से डरो और हर प्राणी को यह देखना चाहिए कि उस ने कल (क़ियामत) के लिए क्या करके आगे बढ़ाया है, तथा अल्लाह से डरते रहो, निःसन्देह अल्लाह तआला जो कुछ तुम करते हो उसे जानने वाला है,।'' ''तथा उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया, तो उसने उन्हें उनके नफ्स को भुला दिया, यही लोग फासिक़ हैं।'' ''जहन्नम वाले और जन्नत वाले बराब नहीं हो सकते, जन्नत वाले ही सफल हैं।'' सदक़ा करो पूर्व इसके कि तुम्हारे और सद्क़ा के बीच कोई रूकावट आड़े आ जाए।}

चुनाँचि किसी आदमी ने दीनार सद्क़ा किया, किसी ने दिरहम, किसी ने अपना कपड़ा, किसी ने गेहूँ का सा'अ तो किसी ने खजूर का सा'अ, यहाँ तक कि आप ने फरमाया : {तुम में से कोई व्यक्ति किसी भी मात्रा में सद्क़ा को कमतर (तुच्छ) और साधारण न समझे} चाहे आधा खजूर ही की क्यों न हो, {लोगों ने देर किया यहाँ तक कि आपके चेहरे पर गुस्सा का प्रभाव स्पष्ट हो गया} वह कहते हैं : चुनाँचि एक

अन्सारी आदमी {चाँदी की (और एक रिवायत के अनुसार :सोने की)} एक थैली लेकर आया जिसे उसकी हथेली उठाने से असमर्थ हो रही थी, बल्कि असमर्थ हो चुकी थी, {और उसे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पकड़ा दिया जबकि आप अपने मिम्बर ही पर थे} {उसने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह अल्लाह के रास्ते में है},{रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे ले लिया}, {अबू बक्र खड़े हुए और उन्हों ने दान किया, फिर उमर खड़े हुए और उन्हों ने दान किया, फिर अन्सार व मुहाजेरीन खड़े हुए और उन्हों ने दान किया}, फिर लोग एक के बाद एक सद्क़ा करने लगे}, {कोई दीनार वाला है तो कोई दिरहम, कोई कुछ दान कर रहा है तो कोई कुछ} यहाँ तक कि मैं ने देखा कि खाने और कपड़े के दो ढेर लग गए, यहाँ तक कि मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे को सोने कि तरह चमकते हुए देखा, तब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''जिस आदमी ने इस्लाम में कोई अच्छा तरीक़ा जारी किया, तो उसे उसका अज्र व सवाब और उसके बाद उस पर अमल करने वालों का भी अज्र व सवाब मिले गा जबकि उनके अज्र में कोई कमी नहीं होगी, और जिस ने इस्लाम में कोई गलत (बुरा) तरीक़ा निकाला (चलाया) तो उसे उसका गुनाह और उसके बाद उस पर चलने वालों का भी गुनाह मिले गा जबकि उनके गुनाहों में कोई कमी नहीं होगी।'' (सहीह मुस्लिम हदीस नं.:2398, तथा अन्य हदीस की किताबें, देखिए : अह्कामुल-जनाईज़ पृष्ठ : 177-178)

मुसलमानों की सहायता करना आदमी के स्वयं अपने संकटों के मोचन का एक महत्वपूर्ण कारण है :

क्योंकि बदला कार्य ही के समान मिलता है, चुनाँचि सहीह मुस्लिम में हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फरमान है :

''जिसने किसी मुसलमान की परेशानी (संकट) को दूर कर दिया तो उसके बदले अल्लाह तआला उसकी क़ियामत के दिन की परेशानियों में से एक परेशानी को दूर कर देगा।'' (हदीस नं.:58)

हम में से कौन ऐसा आदमी है जो यह नहीं चाहता कि अल्लाह तआला उसकी उस दिन की परेशानियों को दूर फरमाए जिस दिन कि बच्चे बूढ़े हो जायें गे, दूध पिलाने वाली महिला अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाए गी और गर्भवती महिला गर्भ-पात कर देगी। जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ﴾ (المزمل:١٧)

''यदि तुम ने कुफ्र किय तो उस दिन से कैसे बच सको गे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।'' (सूरतुल मुज़म्मिल :17)

तथा फरमाया :

﴿ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى وَلَكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيدٌ ﴾ (الحج: ١-٢)

''ऐ लोगो! अपने पालनहार से डरो, यक़ीनन क़ियामत का झटका एक महान (भयंकर) घटना है, जिस दिन तुम देखो गे कि हर दूध पिलाने वाली औरत उस से अचेत हो जाए गी जिसे उसने दूध पिलाया है, और हर गर्भ वाली महिला अपने गर्भ को गिरा दे गी, तथा तुम लोगों को मदहोश देखो गे, हालाँकि वास्तव में वे मदहोश नहीं होंगे, किन्तु अल्लाह का अज़ाब ही इतना भयंकर होगा।'' (सूरतुल हज्ज :१-२)

तथा मुसलमानों की सहायत करना अल्लाह की मदद का कारण है :

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''अल्लाह तआला उस समय तक बन्दे की मदद में होता है जब तक कि बन्दा अपने भाई की सहायता में लगा रहता है।'' (सहीह मुस्लिम हदीस नं.:38)

अतः आप अपने मुसलमान भाईयों की मुसीबतों और परेशानियों में उनकी सहायता करें, अल्लाह आप के सभी मामलों में आप का सहायक होगा।

तथा तबरानी की रिवायत में है कि :

''अल्लाह तआला निरंतर बन्दे की आवश्यकता-पूर्ति में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की आवश्यकता-पूर्ति में लगा होता है।''

मुसलमानों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास करना मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में ऐतिकाफ़ करने से अधिक श्रेष्ठ है :

हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

''मेरा किसी भाई की आवश्यकता में उसके साथ चल कर जाना मेरे निकट इस से अधिक पसंदीदा है कि मैं एक महीना इस मस्जिद (अर्थात् मदीना की मस्जिद) में ऐतिकाफ करूँ, और जो आदमी अपना गुस्सा पी गया, हालाँकि अगर वह उसे नाफिज़ करना चाहता तो कर सकता था, तो अल्लाह ताअला क़ियामत के दिन उसके दिल को प्रसन्नता से भर देगा, और जो आदमी अपने भाई के साथ किसी आवश्यकता में चल कर जाए यहाँ तक कि उसकी आवश्यकता पूरी कर दे तो अल्लाह तआला उस दिन उसके क़दम को स्थिर कर (जमा) देगा जिस दिन लोगों के पाँव फिसल (डगमगा) जाएँ गे।'' (सहीहुल जामिअ् हदीस नं.:176)

इस हदीस में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं :

प्रथम : यह कि मस्जिदे नबवी में एक नमाज़ मस्जिदे हराम को छोड़ कर अन्य मस्जिमदों में एक हज़ार नमाज़ के बराबर है, और ऐतिकाफ करने वाला सभी 150 वक़्तों की नमाज़ें मस्जिद में ही पढ़े गा और यह एक लाख पचास हज़ार (150000) नमाज़ों के बराबर हो जायें गीं।

द्वितीय : यह आवश्यकता सम्भव है की पूरी हो जाए और ऐसा भी हो सकता है कि पूरी न हो।

इसके बावजूद उस आवश्यकता में उसके साथ जाना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकट अपनी मस्जिद में एक महीना ऐतिकाफ करने से अधिक पसंदीदा है।

तथा जो आदमी उसकी आवश्यकता पूरी होने और उसके उद्देश्य के साकार होने तक उसके साथ रहता है तो ऐसे व्यक्ति को अल्लाह तआला उस दिन स्थिरता प्रदान करेगा जिस दिन लोगों के पाँव उखड़ जाएँ गे।

मोमिन की मदद और सहयोग करना अल्लाह की दया और कृपा का पात्र है:

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''दया करने वालों पर अति दयालू अल्लाह तबारका व तआला दया करता है, तुम धरती वालों पर दया करो, आकाश वाला तुम पर दया करे गा।'' (सहीह सुनन तिर्मिज़ी)

तथा फरमाया :

''जो दया नहीं करता उस पर दया नहीं की जाती।'' (बुखारी व मुस्लिम)

मुसलमान की सहायता करना अल्लाह के निकट सब से पसंदीदा कामों में से है :

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है वह कहते हैं कि : एक आदमी अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह के निकट सब से अधिक प्रिय व्यक्ति कौन है? आप ने उत्तर दिया :

''अल्लाह के निकट सब से अधिक प्रिय व्यक्ति वह है जो लोगों को सब से अधिक लाभ पहुँचाने वाला है, और अल्लाह के निकट सब से अधिकतर पसंदीदा काम यह है कि तुम किसी मुसलमान को खुशी से दो चार कर दो, उस से किसी संकट (परेशानी) को दूर कर दो, या उसके किसी क़र्ज़ को चुका दो, या उसकी भूख को मिटा दो।'' (सहीहुल जामिअ् हदीस नं.:176)

मुसलमान को असहाय छोड़ देने से डराया गया है :

जिस प्रकार कि मोमिन का सहयोग करने, उसका साथ देने के लिए उठ खड़े होने की अभिरूची दिलाई गई है, उसी प्रकार उसे असहाय छोड़ देने, और उसकी सहायत

और पक्ष करने से अलग-थलग हो जाने से रोका और डराया गया है, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

"एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, अतः वह उस पर अत्याचार न करे और न ही उसे असहाय छोड़े।" (बुखारी व मुस्लिम)

मुसलमान की सहायता न करना फ़ित्ना और बड़े फसाद का कारण है :

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ﴾

(سورة الأنفال:٧٣)

"काफिर लोग आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, अगर तुम ऐसा न करो गे, तो धरती पर फित्ना और बड़ा बवाल पैदा होगा।" (सूरतुल अन्फाल :73)

आयत का अर्थ यह है कि कुफ्फार आपस में एक दूसरे की सहायता और मदद करते हैं, और अगर हमारे बीच यह सहयोग पैदा न हुआ तो फसाद और बवाल फैल जाए गा। इमाम तबरी रहिमहुल्लाह कहते हैं : ऐ मोमिनों ! अगर तुम दीन के मामले में एक दूसरे की सहायता न करो गे, तो धरती में फित्ना और बड़ा फसाद पैदा होगा।

तथा इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह कहते हैं : "अर्थात् : अगर तुम मुशरिकों से अलग-थलग नहीं रहो गे और मोमिनों से दोस्ती न करो गे, तो लोगों में फित्ना जन्म ले गा, अर्थात् मामला गडमड हो जाए गा और मोमिन काफिर से मिल जाऐंगे, जिसके नतीजे में बहुत बड़ा और लंबा-चौड़ा फसाद पैदा होगा।"

तथा अल्लाह तआला ऐसे आदमी को असहाय छोड़ देगा :

जाबिर बिन अब्दुल्लाह और अबू तल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है वे दोनों कहते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"जो अदमी भी किसी मुसलमान की ऐसी जगह में सहायत और मदद करना छोड़ देता है जहाँ उसकी हुर्मत को पामाल किया जाता है और उसकी बे-इज़्ज़ती की जाती है, तो अल्लाह तआला ऐसे आदमी को ऐसी जगह पर असहाय छोड़ देगा जहाँ वह उसकी सहायता और सहयोग को पसंद करता है। तथा जो आदमी किसी मुसलमान की ऐसी जगह में सहायता और सहयोग करता है जहाँ उसकी हुर्मत को पामाल किया जाता है और उसकी बे-इज़्ज़ती की जाती है, तो अल्लाह तआला ऐसे आदमी की ऐसी जगह पर सहायता और मदद करेगा जहाँ वह उसकी सहायता को पसंद करता है।" (अहमद, अबू दाऊद)

क़ब्र में अज़ाब दिये जाने का कारण है :

अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''अल्लाह के एक बन्दे को उसकी क़ब्र में सौ कोड़ा मारे जाने का हुक्म दिया गया, चुनाँचि वह निरंतर प्रार्थना और सवाल करता रहा यहाँ तक कि (कम होकर) एक कोड़ा हो गया, चुनाँचि उसे एक कोड़ा मारा गया तो उसकी क़ब्र उसके ऊपर आग से भर गई, फिर जब वह (आग) उठा ली गई तो उसने कहा : मुझे तुम ने क्यों कोड़ा लगाया? उन्हों ने कहा : तू ने एक नमाज़ बिना पवित्रता के पढ़ी थी, और एक मज़लूम के पास से गुज़रा था तो उसकी मदद नहीं की थी।'' (इसे इब्ने हिब्बान ने रिवायत किया है, देखिये : सहीहुत्तरग़ीब वत्तरहीब हदीस नं.: 2234)

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com

islamhouse.com

المملكة العربية السعودية – الرياض
المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات
بالربوة
٢٠٠٩م – ١٤٣٠هـ

﴿ نصرة المسلمين واجب شرعي ﴾

« باللغة الهندية »

عطاء الرحمن ضياء الله

حقوق الطبع والنشر لعموم المسلمين